भारत के भाषाई सिनेमा में प्रदर्शित सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य का समाज पर प्रभाव : भोजपुरी एवं बांग्ला फिल्मों के सन्दर्भ में

जनसंचार एवं पत्रकारिता में पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध सार

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY

•LUCKNOW•

प्रज्ञा शील करूणा

ESTABLISHED 1996

शोध पर्यवेक्षक

प्रो.(डॉ.) गोविन्द जी पाण्डेय

शोधार्थी

प्रतिमा

पंजीयन सं. 1227/16

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग

सूचना विज्ञान एवं तकनीकी विद्यापीठ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025 (उ०प्र०)

2022

भारत के भाषाई सिनेमा में प्रदर्शित सामाजिक, सांस्कृतिक परिदृश्य का समाज पर प्रभाव : भोजपुरी एवं बांग्ला फिल्मों के सन्दर्भ में

1.1 प्रस्तावनाः

भारतीय फिल्मों का हमेशा से ही देश–विदेश में अपना एक अलग स्थान रहा है। फिल्मों के निर्माण के साथ ही विभिन्न भाषाओं जिसमें आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, केरल, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, पं. बंगाल और बॉलीवुड शामिल है।भारतीय सिनेमा का 20 वीं सदी की शुरुआत से ही विश्व के चलचित्र पटल पर गहरा प्रभाव रहा है। कहा जाता है समाज को सही राह दिखाने में सिनेमा की अहम भूमिका होती है क्यूंकि सिनेमा दृश्य एवं श्रव्य दोनों का मिला जुला रूप है और ये सीधे मनुष्य के ऊपर प्रभाव डालता है द्य भारतीय फिल्मों का अनुकरण पूरे दक्षिण एशिया, ग्रेटर मध्य पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्व सोवियत संघ में भी होता है। भारतीय भाषाओं में प्रतिवर्ष लगभग 1600 फिल्मों का निर्माण होता है। लुमिएरे बंधुओं का ऑस्ट्रेलिया जाने से पहले मुंबई आना और 7 जुलाई, 1896 में उसका संयोगवश प्रदर्शन करना भारतीय सिनेमा की पहल माना जा सकता है। "दादा साहेब फाल्के" हिंदी सिनेमा के जनक के रूप में जाने जाते हैं द्य सिनेमा को लोगों से रूबरू करने का श्रेय "दादा साहेब फाल्के" को ही जाता है। सिनेमा के इतिहास में 3 मई एक ऐसी यादगार तारीख है जिस दिन भारतीय सिनेमा की पहली फीचर फिल्म "राजा हरिश्चंद्र" का रुपहले पर्दे पर पदार्पण हुआ था और इसका श्रेय सिनेमा के जनक "दादा साहेब फाल्के" को जाता है। 1913 से 1929 तक सिनेमा में मूक फिल्मों का दौर था 1930 में चलचित्रों में ध्वनि का तकनीकी विकास होने से सवाक फिल्म बनाने का दौर आया और सिनेमा जगत की पहली बोलती फिल्म "आलम आरा" 1931 में प्रदर्शित हुई जिसका श्रेय अर्देशीर ईरानी को जाता है द्य भारतीय सिनेमा की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली 1943 में बनी फिल्म "किस्मत" के नाम दर्ज है,कोलकत्ता के सिनेमाहाल में लगातार तीन साल तक चलने वाली फिल्म "किस्मत" कई मायनों में एक अनूठी फिल्म थीद्य बॉम्बे टाल्कीस के इस फिल्म से भारतीय सिनेमा को अशोक कुमार के रूप में पहला "एंटी हीरो" मिला ,पहली बार इस फिल्म में एक अविवाहिता लड़की को गर्भवती के रूप में दिखाया गया था,पहली बार डबल रोल को इस फिल्म के माध्यम से दिखाया गया था। फिल्म ने उस समय (1943) एक करोड़ रूपए की कमाई करी थी जो की आज के समय में 63 करोड़ 20 लाख के बराबर है।

सन 1931 में अर्देशीर एम.ईरानी ने न केवल पहली सवाक सिनेमा "आलम आरा" बनाई, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के सिनेमा को आगे लाने में अहम् भूमिका अदा की। "आलम आरा" प्रदर्शित होते ही हिंदी के साथ दृसाथ मराठी ,बांग्ला और भी दूसरी भाषाओं में फिल्में बननी शुरू हो गयी थी। भोजपुरी की तुलना में कहीं कम और कहीं दृकहीं तो बहुत ही कम क्षेत्र में बोली जानेवाली भाषाओं में भी फिल्म निर्माण 1931 के तुरंत बाद से ही शुरू हो गयी थी। गुजराती में 1932 से फिल्में बनने लगीं, जबकि पंजाबी और असमिया फिल्मों की शुरुआत 1935 में हो गयी थी वहीं उड़िया फिल्मों की शुरुआत 1936 से हो गया था। भोजपुरी की शुरुआत होने के पूर्व यानी 1931 से 1961 के दौरान 103 गुजराती, 59 पंजाबी, 26 असमिया और 18 उड़िया फिल्में बन चुकी थी। भारत अलग–अलग संस्कृति, रंग और स्वाद वाला देश है। इसमें विभिन्न आयामों को आत्मसात करने और इसे स्वयं बनाने की क्षमता है। सोसाइटी और सिनेमा का संबंध काफी स्पष्ट है। सिनेमा में न केवल समाज को बदलने की क्षमता है बल्कि यह भी इसे बढ़ा सकता है। दरअसल, मनुष्य एक सामाजिक पशु है और समाज से प्रभावित होता है। मीडिया और प्रौद्योगिकी उसे प्रभावित करते हैं निस्संदेह, क्षेत्रीय सिनेमा का असर हमारे मनोविज्ञान पर बहुत जबरदस्त है। हम अपनी क्षेत्रीय भाषा के साथ बहुत जुड़ा हुआ और सहज महसूस करते हैं। यह एक तथ्य है कि हमारी अपनी भाषा में व्यक्त संदेश अधिक प्रभावशाली और विस्तृत होता है। यही कारण है कि पंजाबी और दक्षिण भारतीय सिनेमा उभर रहे हैं। वास्तव में, बॉलीवुड भी ऐसी क्षेत्रीय प्रतिभाओं का लाभ

उठा रही है। कन्नड़, गुजराती, मराठी, तेलुगु. मलयालम. पंजाबी इत्यादि भाषा में हर साल बड़ी मात्र में फिल्मों का निर्माण होता है। भाषाई सिनेमा कहीं ना कहीं हमारे समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं और हमारे समाज की मूल जड़ों को, धरोहरों को संभाले हुए हैं और बांग्ला एवं भोजपुरी भी उन्ही भाषाई सिनेमा में से है जिसने अपनी संस्कृति और उनकी जड़ों को महफूज़ रखा है।

भोजपुरी में ढेर सारी फ़िल्में गंगा पर आधारित नाम से बनी हैं,मुख्यत भोजपुरी फिल्में गंगा के आर दृपार ही भटकती रहती हैं, गंगा मैया तोहे पियरी चढ़ैबो .गंगा घाट ,गंगा ,जहाँ बहे गंगा के धार इत्यादि। भोजपुरी सिनेमा का इतिहास नज़ीर हुसैन द्वारा लिखित, बिसननाथ प्रसाद शाहाबादी द्वारा निर्मित और कुंदन कुमार द्वारा निर्देशित कि गयी 1962 में बनी भोजपुरी फिल्म "गंगा मैय्या तोहे पियरी चढ़ैबो" को पहली फिल्म होने का गौरव प्राप्त है। यह एक ऐसी फ़िल्म है जिसको काफी सराहा गया और आज भी लोग इस फिल्म को याद करते हैंद्यजिस भोजपुरी सिनेमा के सफ़र की शुरुआत नज़ीर हुसैन जी ने की थी वो सफ़र आज तक बदस्तूर जारी है। "गंगा मैय्या तोहे पियरी चढ़ैबो (1962)" जैसी फिल्म बनने के बाद कई सफ़ल फिल्मों का निर्माण हुआ जिसमे 'बलम परदेसिया (1979)', 'दुल्हा गंगा पार के(1986)', 'हमार भउजी(1983)', 'नदिया के पार(1982)', 'पिया रखिह सेनुरवा के लाज(1987)', 'दगाबाज बलमा(1988)' जैसी फिल्मों का नाम दर्ज है। कहीं न कहीं भोजपुरी फिल्मों की सफलता का श्रेय भोजपुरी गीतों की मधुरता एवं अर्थपूर्ण संवादों को जाता है।

बंगाल में सिनेमा का इतिहास 1890 के दशक से ही आरंभ हो गया था, जब यूरोपियन कंपनी द्वारा कलकत्ता के थिएटर में पहली 'बायोस्कोप दिखाए गए थे। उद्योग के रूप में इसका बीजारोपण हिरालाल सेन द्वारा बोया गया, जिसे विक्टोरियन युग सिनेमा के एक मस्तिष्क के रूप में देखा गया, जब उन्होंने रॉयल बायोस्कोप कंपनी(1898) की स्थापना की उसके बाद उन्होने कई लोकप्रिय शो के मंच निर्माण के दृश्यों का निर्माण किया। स्टार थियेटर, मिनर्वा थिएटर, क्लासिक थियेटर में सेन के काम के बाद एक लंबे अंतराल के बाद, धीरेंद्र नाथ गांगुली ने 1918 में इंडो ब्रिटिश फिल्म को स्थापित किया, पहली बंगाली स्वामित्व वाली उत्पादन कंपनी। हालांकि, पहली बंगाली फीचर फिल्म बिलवामंगल का निर्माण 1919 मदन थियेटर के बैनर तले बनी वहीं "बिलाटफरट" 1921 में आईबीएफसी का पहला उत्पादन था। मदन थिएटर के बैनर तले बांग्ला में बनी "जमाई सष्टि" (11 अप्रैल 1931) पहली बोलती फिल्म थी, जबकि फुल लेंथ फिल्म "देना पऊना" 30 दिसम्बर 1931 को प्रदर्शित हुई थी । तब से एक लंबा इतिहास रहा है, जिसमें सत्यजीत रे, मृणाल सेन और ऋत्विक घटक और कई अन्य दिग्गज कलाकारों ने फिल्म के इतिहास में अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रशंसा और लोगों के बीच अपनी फिल्मों के द्वारा पहचान स्थापित करने में सफल रहेद्य

1.2 सैद्धान्तिक रूपरेखा :–

अगर बात करी जाए भाषाई सिनेमा की तो ये मुख्यतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य पर ही आधारित होती है। भाषाई सिनेमा मुख्यतः ग्रामीण परिवेश पर आधारित होती हैं और ऐसी फिल्मों को देखने के बाद समाज और उसकी संस्कृति से जुड़ी कई रोचक जानकारियां भी प्राप्त होती है जैसे जैसे वक्त बदला वैसे वैसे भाषाई सिनेमा में भी काफी बदलाव देखने को मिला।

भाषाई सिनेमा और स्त्री चरित्र :–

भाषाई सिनेमा में अगर बात करें स्त्री के चरित्र की तो कहीं न कहीं वो सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से प्रभावित नजर आता है। बंगाली सिनेमा में अगर महिला किरदारों को देखे तो कहीं न कहीं वो किरदार अपने हक के प्रति जागरूक एवं तेज तर्रार नजर आती है। और उसमे उनका सांस्कृतिक और सामाजिक पहलू भी दिखता है। वहीं भोजपुरी सिनेमा में पुरबिया संस्कृति का प्रभाव दिखता है और महिला अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक दाईत्वों में उलझी नजर आती है ।

फ्रंकफर्ट स्कूल ऑफ सोशियोलॉजी (जर्मनी) द्वारा क्रिटिकल थ्योरी (या सामाजिक आलोचनात्मक सिद्धान्त) पहली बार **1937** में मैक्स होर्केमर ने दिया था। आलोचनात्मक सिधान्त एक सामाजिक सिधान्त है जो समाज की हीत की बात करता है और रूढ़ीवादी विचारधारा की आलोचना करता है। सभ्य समाज का निर्माण कई बातों पर निर्भर करता है। समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियाँ कभी समाज को विकास नहीं करने देती। हमारी सोच, समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी, रूढ़ीवादी सोच के प्रति आवाज एक नया और विकसित समाज का निर्माण करती है।

महत्वपूर्ण सिद्धांतों की मुख्य अवधारणा इस प्रकार हैः

- उस महत्वपूर्ण सामाजिक सिद्धांत को अपने ऐतिहासिक विशिष्टता में समाज की समग्रता पर निर्देशित किया जाना चाहिए (यानी यह किसी विशिष्ट समय में कैसे कॉन्फिगर किया गया),
- उस महत्वपूर्ण सिद्धांत को भूगोल, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, नृविज्ञान और मनोविज्ञान सहित सभी प्रमुख सामाजिक विज्ञानों को एकीकृत करके समाज की समझ में सुधार करना चाहिए।

नारीवादी दृष्टिकोण सिद्धांत (फेमिनिस्ट स्टैंडपॉइंट थ्योरी) की बात पहली बार "सान्द्र जी.हार्डिंग" ने की जो की एक अमेरिकन फिलोस्फर हैं। **1970** के दशक में, सामाजिक विज्ञान विषयों की एक सीमा के भीतर मार्क्सवादी नारीवादी और नारीवादी आलोचनात्मक सैद्धांतिक दृष्टिकोण से पहला नारीवादी दृष्टिकोण सिद्धांत उभरा। दृष्टिकोणवादी सिद्धांत, एक नारीवादी सैद्धांतिक दृष्टिकोण जो तर्क देता है कि ज्ञान सामाजिक स्थिति से उत्पन्न होता है और इस परिप्रेक्ष्य से इनकार करते हैं कि पारंपरिक विज्ञान उद्देश्य है और सुझाव देते हैं कि अनुसंधान और सिद्धांत ने उपेक्षा की है और महिलाओं को और महिलाओं के नारीवादी तरीके से सोचने के लिए वंचित किया है।

नारीवादी दृष्टिकोण सिद्धांत को चार चरण में विभाजित किया गया है :–

- पहला चरण :– पहले चरण के अंतर्गत महिलाओं के वोटिंग राइट्स की बात की गयी हैं। उन्हे इतना अधिकार मिले की वो अपनी मर्जी से अपना प्रतिनिधि चुन सके ।
- दूसरा चरण :– इसके अंतर्गत प्रोफेशनल राइट्स की बात की गयी है जिसके तहत यह बात रखी गयी की महिलाओं को शिक्षा का बराबर अधिकार मिले, अपनी मर्जी से शिक्षा में चुनाव का अधिकार मिले इत्यादि ।
- तीसरा चरणः– तीसरे चरण में महिलाओं के ड्रेसिंग कोड, पब्लिक स्पीकिंग, पब्लिक ओपिनियन के अधिकार की बात करी गयी थी । महिलाएं अपनी मर्जी से कुछ भी पहन सकने की आजादी मिले,सार्वजनिक जगहों पर अपनी बात कहने और अपनी बात रखने का हक मिले इन बातों को वरीयता दी गयी थी ।
- चौथा चरणः– चौथा चरण मतलब 21वी सदी जो की आज के समय के हिसाब की बात करता है। इसमे महिलाओं के सेक्सुअल रिलेशन, अपनी मर्जी अपनी जिन्दगी का फैसला इत्यादि बातें आती हैं ।

भाषाई सिनेमा और समाज :–

भाषाई सिनेमा में समाज मुख्य भूमिका निभाता है। समाज में घटने वाली अच्छी और गलत बातें सिनेमा का मुख्य केंद्र बिंदु होता है। सिनेमा के माध्यम से ही समाज मे व्याप्त कुरीतियों, महिलाओं के प्रति हो रहे शोषण इत्यादि बातों को लोगों तक पहुँचाया जाता है।सिनेमा में कहानी मुख्यतः रैखकीय ढांचे में होती थी, वही घर परिवार,ग्रामीण परिवेश,कृषि इत्यादि।

सामाजिक विकास सिद्धांतः–

सामाजिक विकास सिद्धांत समाज के ढांचे और ढांचे में गुणात्मक परिवर्तनों को समझाने का प्रयास करता है, जिससे समाज को लक्ष्य और उद्देश्यों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है। इस सिद्धान्त के अंतर्गत समाज के विकास के लिए जरूरी सभी घटकों पर बात करी गयी है।

भाषाई सिनेमा का विखंडनवादः–

अगर हम सिनेमा के शुरुआती दौर को देखे तो कहानियां बहुत ही सीधी सरल और समाज को एक सन्देश देने वाली फिल्में होती थी,परन्तु आज का सिनेमा इसके विपरीत है। आज के सिनेमा पर कहीं न कहीं आधुनिकतावाद हावी है और इसका उदाहरण आज की फिल्में हैं। आज की फिल्मों की कहानियां सामाजिक महत्व से ज्यादा राजनीतिक और छोटे छोटे मुद्दों पर आधारित होती हैं और आज के समय में बन रही फिल्में इसका मुख्य उदाहरण हैं।

1.3 अध्ययन की आव"यकता –

दोनों क्षेत्रों की फिल्म शैलियों का अपने क्षेत्र के विकास में, मनोरंजन में, जागरूकता आदि में वि"ोष योगदान है। इसके साथ ही दोनों क्षेत्रों में बनने वाली फिल्मों के भारी संख्या में द"ार्क भी हैं। ऐसे में यह अध्ययन का क्षेत्र बनता है कि इन फिल्मों का जनमानस के बीच क्या योगदान है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने बांग्ला एवं भोजपुरी फिल्मों के सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं को जानने का प्रयास किया। यदि यह पता चले कि बांग्ला एवं भोजपुरी फिल्मों का प्रभाव जनमानस पर क्या पड़ रहा है, साथ ही इन क्षेत्रों की फिल्मों से द"ार्कों अथवा नागरिकों की जागरूकता स्तर पर क्या प्रभाव पड़ रहा है तो इन क्षेत्रों में भविष्य में बनने वाली फिल्मों के निर्माण में नई दि"ाा निर्धारित की जा सकती है। इसके साथ ही नागरिकों के मनोरंजन के साथ ही जागरूकता स्तर को बढ़ाने एवं सामाजिक–सांस्कृतिक सोहार्द की नई दि"ाा तय करने में आसानी होगी। इन बिन्दुओं के महत्व के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन की आव"यकता उत्पन्न होती है।

1.4 उद्देश्य

शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित शोध उद्देश्य हैं–

- भाषाई सिनेमा में बदलते स्त्री चरित्र का अध्ययन ।
- भाषाई सिनेमा में प्रदर्शित सामाजिक कुरूतियों एवं सामाजिक द्वंदों एवं उनका समाजपर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन ।
- भाषाई सिनेमा में दिखाए जाने वाले सांस्कृतिक पहलूओं एवं समाज पर उसके प्रभाव का अध्ययन करना ।
- संगीत के सामाजिक पक्ष का अध्ययन करना ।
- भाषाई सिनेमा में तकनीकी बदलाव और डिजिटल तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन ।

1.5 शोध प्रश्न

निम्नलिखित शोध प्रश्नों को ध्यान में रखकर शोधार्थी द्वारा शोध कार्य किया गया है :–

- क्या भाषाई सिनेमा में स्त्री पारिवारिक दायित्वों और सती सावित्री की भूमिका में नजर आती है?
- क्या भाषाई सिनेमा में संगीत के माध्यम से सामाजिक संबंधों और संस्कृति को बखूबी दर्शाया जाता है?
- क्या भाषाई सिनेमा में डिजिटल क्रांति के कारण तकनीकी पक्ष में आये बदलाव के कारण सिनेमा निर्माण में आम लोगों की भागीदारी बढ़ी है?

- क्या बांग्ला सिनेमा में जाति व्यवस्था और धार्मिक प्रतीकों का इस्तेमाल सामाजिक भिन्नता दिखाने के लिए किया गया है?
- क्या स्त्री समस्याओं के चित्रण में बांग्ला सिनेमा समस्याओं से ऊपर उठ पाया है ?
- क्या भोजपुरी सिनेमा में अश्लीलता के कारण समाज से दूरी बनी है ?

1.6 साहित्य अवलोकन

सिनेमा पर आधारित प्रियदर्शन की "नए दौर का नया सिनेमा", अविजीत घोष की "सिनेमा भोजपुरी", रविराज पटेल की "भोजपुरी फिल्मों का सफरनामा", किताबें हैं।

प्रियदर्शन की किताब "नए दौर का नया सिनेमा" मे मूलतः इसी दौर की फिल्मों की चर्चा है। इस किताब में कुछ फिल्मों की तीखी आलोचना की गयी है तो कुछ की तारीफ। कुल मिलकर इस किताब में 21वी सदी में बनी फिल्मों के नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं का मिश्रण है।

अविजीत घोष और रविराज पटेल द्वारा भोजपुरी सिनेमा पर लिखी गयी किताब "सिनेमा भोजपुरी" और "भोजपुरी फिल्मों का सफरनामा" में भोजपुरी सिनेमा के सफर को बयां करती है।

किरोंमोय राहा द्वारा बंगाली सिनेमा पर लिखित किताब में बंगाली सिनेमा के लगभग सभी पहलुओं पर बात की गयी है चाहे वो सिनेमा का शुरुआती दौर हो, संगीत और बोलती फल्मों का दौर हो सत्यजित रे, ऋत्विक घटक, मृणाल सेन के सिनेमा का दौर, वक्त के साथ हुए बंगाली सिनेमा में बदलाव हो या फिर 21वी सदी का सिनेमा सभी मुख्य बातों को इस किताब के माध्यम से जाना जा सकता है।

1.7 शोध प्रविधि

इस शोध–कार्य को पूरा करने के लिए शोधार्थी द्वारा विन्यास क्रमात्मक (Syntagmatic) एवं रूप निर्दर्शनात्मक (Paradagmatic) विधि का इस्तेमाल किया जायेगा। फिल्मों के चयन के लिए बांग्ला और भोजपुरी फिल्मों में से हर दशक से सफल फिल्मों का चयन किया जायेगा। इन सभी फिल्मों का अन्तर्वस्तु विश्लेषण किया जायेगा और प्रभाव के लिए कुल 500 लोगों पर 250 बांग्ला एवं 250 भोजपुरी फिल्मों से जुड़ी प्रश्नावली के माध्यम से प्रभाव का आंकलन किया जायेगा।

विन्यास क्रमात्मक (Syntagmatic) –विन्यास क्रमात्मक विश्लेषण के द्वारा हर एक सीन, शॉट और सीक्वेंस के विश्लेषण के साथ ये भी देखा जाता है की उनके बीच कोई सम्बन्ध है या नहीं। फिल्म के निर्माण में शॉट को समझने के लिए दृश्य निर्माण के हर एक पहलू को समझना होता है। किसी भी फिल्म का निर्देशक फिल्म में में जो दृश्य का निर्माण करता है उसको समझने के लिए दृश्य का विन्यास क्रमात्मक विश्लेषण अवश्यक है।

रूप निदर्शनात्मक (Paradagmatic) – रूप निदर्शनात्मक के अंतर्गत फ्रेम में दिखने वाले सीन का विश्लेषण किया जाता है। रूप निदर्शनात्मक में जब भी बात होती है यथार्थ की बात करी जाती है। फिल्मों में जो भी दर्शया जाता है वो रूप निदर्शनात्मक का हिस्सा होता है। इसमे एडिटिंग के माध्यम से हर शॉट का जो अर्थ निकलता है उसका विश्लेषण किया जाता है।

1.8 अध्ययन का क्षेत्र –अध्ययन का क्षेत्र बांग्ला एवं भोजपुरी फिल्में हैं। शोधार्थी ने अध्ययन के लिए बांग्ला एवं भोजपुरी फिल्मों का क्षेत्र चयनित किया, जोकि अध्ययन की समस्या से सम्बन्धित है। अध्ययन का अंतराल वर्ष 1950 से

लेकर 2020 तक का निर्धारित किया गया है। इसके लिए समयान्तराल में आने वाली फिल्मों का एकत्रीकरण कर वि"ोष फिल्मों का चयन किया, जोकि अध्ययन की समस्या से सम्बन्धित रहे।

1.9 चयन विधि –फिल्मों के वि"लेषण के लिए आव"यक है कि बांग्ला फिल्मों एवं भोजपुरी फिल्मों का चयन करना आव"यक है। इसीलिए अध्ययन के लिए शोधार्थी ने फिल्मों के चयन के लिए बांग्ला और भोजपुरी फिल्मों में से हर दशक से दो सफल फिल्मों का चयन किया गाया। चयनित फिल्मों का चयन कर उन सभी फिल्मों का अन्तर्वस्तु विश्लेषण किया गया। अध्ययन के लिए शोधार्थी ने बांग्ला एवं भोजपुरी फिल्मों के लिए 1950 के द"ाक से लेकर वर्ष 2020 तक की सफल फिल्मों का चयन किया। चयन करने के लिए असम्भाव्यता निद"र्न विधि (Non Probability Sampling) का उपयोग किया गया। विभिन्न फिल्मों के चयन के लिए प्रत्येक द"ाक से विभिन्न सफल फिल्मों को एकत्रित किया गया, जिसके बाद सफलतम फिल्म को विवेकानुसार, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं के अनुसार चयनित किया गया। सभी चयनित फिल्मों की सामान्य जानकारी इस प्रकार है–

क्र० सं०	**समय अन्तराल**	**बांग्ला**		**भोजपुरी**	
		फिल्म का नाम	**विमोचन तिथि**	**फिल्म का नाम**	**विमोचन तिथि**
1	1950-1960	पाथेर पांचाली	1955	----------	----------
2	1960-1970	नायक	1966	गंगा मैया तोहे पियरी चढ़ैबो	1963
3	1970-1980	मेम साहेब	1972	बलम परदेसिया	1979
4	1980-1990	एक दिन प्रतिदिन	1980	ंगा किनारे मोरा गाँव	1984
5	1990-2000	परामितर एक दिन	2000	----------	----------
6	2000-2010	द जापानीज वाइफ	2010	ससुरा बड़ा पैसे वाला	2004
7	2010-2020	चोटोदर चोबी	2014	निरहुआ हिन्दुस्तानी	2014

1.10 चयनित फिल्मों के विमोचन तिथि एवं निर्माता, निर्देशक से जुड़ी जानकारियां फिल्मों की जानकारी

भोजपुरी फिल्में

- फिल्म – गंगा मैया तोहे पियरी चढ़ैबो
- निर्देशक – कुंदन कुमार
- निर्माता – बिश्वानाथ प्रसाद शाहबादी
- कलाकार – कुमकुम, असीम कुमार, नज़ीर हुसैन, लीला मिश्र, पद्मा खन्ना, टुनटुन एवं हेलन
- गायक – लता मंगेशकर,मोहम्मद रफ़ी,सुमन कल्याणपुर,उषा मंगेशकर
- संगीत – चित्रगुप्त
- गीत – शैलेन्द्र एवं चित्रगुप्त

- फिल्म – बलम परदेसिया
- निर्देशक – नजीर हुसैन,नासिर हुसैन
- निर्माता – मुमताज़ हुसैन
- कलाकार – राकेश पांडेय,लीला मिश्र,नज़ीर हुसैन,जयश्री
- गायक – आशा भोसले,मोहम्मद रफ़ी
- संगीत – चित्रगुप्त
- गीत – समीर

- फिल्म – गंगा किनारे मोरा गाँव
- निर्देशक – दिलीप बोस
- निर्माता – अशोक चंद जैन
- कलाकार – नाज़, कुणाल सिंह, अरुणा ईरानी, जयश्री तलपड़े
- गायक – आशा भोसले,मोहम्मद रफ़ी, महेंद्र कपूर, उषा मंगेशकर, चंद्रानी मुख़र्जी, सुरेश वाडकर

- फिल्म – ससुरा बड़ा पैसे वाला
- निर्देशक – अजय सिन्हा
- निर्माता – सुधाकर पाण्डेय
- कलाकार – मनोज तिवारी रानी चटर्जी
- गायक – श्रेया घोषाल, कल्पना पोतवारी, उदित नारायण, दीपा नारायण झा, मनोज तिवारी, प्रिया भट्टाचार्य, विनय बिहारी
- संगीत – लाल सिन्हा
- गीत – विनय बिहारी

- फिल्म – निरहुआ हिन्दुस्तानी
- निर्देशक – सतीश जैन
- निर्माता – प्रवेश लाल यादव , राहुल खान
- कलाकार – दिनेश लाल यादव , आम्रपाली दुबे, संजय पांडेय

- गायक – दिनेश लाल यादव, खुशबू जैन, मोहन राठोड़, इंदु सोनाली, कल्पना, अलोक कुमार, प्रवेश लाल यादव

बांग्ला फिल्मों की जानकारी –

बांग्ला फिल्में

- फिल्म – पाथेर पांचाली (बिभूतिभूषण बंद्योपाध्या)
- निर्देशक – सत्यजित रे
- निर्माता – गवर्नमेंट ऑफ़ वेस्ट बंगाल
- कलाकार – सुबीर बनर्जी (अप्पू), रूनकी बनर्जी (दुर्गा), कनु बनर्जी (हरिहर रे), चुन्निबाला देवी, तुलसी चक्रबोर्टी
- संगीत – रवि शंकर

- फिल्म – नायक
- निर्देशक – सत्यजित रे
- निर्माता – आर.डी.बंसल एंड कंपनी
- कलाकार – उत्तम कुमार, शर्मीला टैगोर
- संगीत – सत्यजित रे

- फिल्म – मेम साहेब
- निर्देशक – पिनाकी भूषण मुख़र्जी
- निर्माता – एंजेल डिजिटल प्राइवेट लिमिटेड
- कलाकार – उत्तम कुमार, गीता डे, सुमित्रा मुख़र्जी, बिकाश रॉय, अपर्णा सेन, जाहोर रॉय
- संगीत – सत्यजित रे

- फिल्म – एक दिन प्रतिदिन (अमलेंदु चक्रबोर्टी के लिखे साहित्य पर आधारित)
- निर्देशक – मृणाल सेन
- कलाकार – ममता शंकर, गीता सेन, श्रीला मजुमदार, सत्या बनजम

- फिल्म – परोमितर एक दिन
- निर्देशक – अपर्णा सेन
- कलाकार – ऋतुपर्ण सेनगुप्त, अपर्णा सेन, सौमित्र चटर्जी
- संगीत – ज्योतिष्का दासगुप्ता

- फिल्म – द जापानीज वाइफ
- निर्देशक – अपर्णा सेन
- कलाकार – राहुल बोस, रायमा सेन, मौसमी चटर्जी, चिगुसा टकाकु
- संगीत – सागर देसाई

- फिल्म – चोटोदर चोबी

- निर्देशक – कौशिक गांगुली
- निर्माता – एस.वी.एफ.एंटरटेनमेंट
- कलाकार – दुलाल सरकार, देबलिना रॉय, अरुण गुहा ठाकुरता, संजय बिसवास
- संगीत – इन्द्रदीप दास गुप्ता

1.11 विश्लेशण पद्धति –

अध्ययन में फिल्मों का वि"लेष्ण करने के लिए फिल्मों के विभिन्न दृ"यों को जोकि सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से संबंधित हैं, उनका वि"लेषण किया गया। इसके लिए बांग्ला एवं भोजपुरी फिल्मों से संबंधित चयनित फिल्मों का चयन किया तथा इसके बाद उनका विभिन्न मापदंडों के आधार पर वि"लेषण कर अध्ययन पूर्ण किया। वि"लेषण के लिए बनाए गए मापदंडों की जानकारी निम्न प्रकार है।

1.12 विश्लेशण के मापदंड –

फिल्मों का वि"लेषण करने के लिए शोधार्थी ने कुछ मापदंड निर्धारित किए हैं, जोकि फिल्मों के सामाजिक–सांस्कृतिक जानकारियों को प्रस्तुत करते हैं। इन मापदंडों को निर्धारित करने के लिए प्रत्येक फिल्म के सामाजिक एवं सांस्कृतिक बिन्दुओं पर ध्यान दिया गया। इन मापदंडों की जानकारी इस प्रकार है–

Parameters For Scene Evaluation

Color appearance (रंगरूप)	Brown	dusky	Whitesh	Other			
Attire (वेशभूषा)	Sari	Dhoti Kurta	Pant-shirt	Salwar suit	Western attire		
Camera shots	Close-up	Long shots	Medium shots	Over the shoulder	Close-up	Pan shot	Tracking shot
The basis of the story (कहानी का आधार)	Fiction	Non – fiction					
Female portrayal (महिला चित्रण)	Mother	Wife	Sister	Lover	Social activist	Mother in law	Other
Male portrayal (पुरुष चित्रण)	Father	Husband	Brother	Business man	Farmer	Politician	Other
Cast (जात)	Upper cast	lower cast					
Education (शिक्षा)	Educated	illiterate	Partially educated	Any other			
Profession (पेशा)	Teacher	Nurse	Doctor	Banker	Police	Actress/actor	Any other
Region/city (क्षेत्र / शहर)	Urban	Rural	National	International	Any Other		
Language (भाषा)	local language	Hindi	Regional language	English	Any Other		
Plot (कथा)							
Songs (गीत)	Traditional song	Sad song	Double meaning song	Meaning full song	Love song	Any other	

Narrative structure (कथा संरचना)	Sequential narrative	Non-Sequential Narrative					
Location (स्थान)	Urban set-up	Village set-up	Peri-urban set-up	International set-up	Any other		

1.13 शोधार्थी द्वारा अध्याय इस प्रकार है:

प्रथम अध्याय

- प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि

इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा सिनेमा से जुडी जानकारी एवं भाषाई सिनेमा के बारे में बताया गया है साथ ही हर भाषाई सिनेमा में आई पहली फिल्म की जानकारी विस्तृत रूप में दी गई है। सिनेमा के इतिहास और उसमे आये बदलाव पर भी चर्चा की गयी है।

द्वितीय अध्याय

- सिनेमा उदभव और विकास

सिनेमा के उद्भव का इतिहास कहाँ से शुरू हुआ और कैसे कैसे वो आगे बढ़ा साथ ही वो इतनी बड़े रूप में कैसे विश्व पटल पर स्थापित हुआद्यबाकी भाषाओं में क्या विकास रहा सिनेमा का इत्यादि बातों का इस अध्याय में समावेश है।

- सिनेमा की भाषा

सिनेमा की भाषा क्या होती है? सिनेमा की भाषा और तकनिकी भाषा में क्या फर्क होता है इस बात की जानकारी दी गयी है।

तृतीय अध्याय

छेत्रिय सिनेमाः– एक परिचय

- बांग्ला सिनेमा का उदय
- भोजपुरी सिनेमा का आगमन

इस अध्याय में बांग्ला और भोजपुरी सिनेमा के इतिहास पर बात की गयी हैद्य दोनों भाषा के सिनेमा के उद्भव और विकास पर बात की गयी है

चतुर्थ अध्याय

- भाषाई सिनेमा और महिला

महिला का सिनेमाई स्वरुप–

- बांग्ला फिल्मों के सन्दर्भ में

- भोजपुरी फिल्मों के सन्दर्भ में

इस अध्याय में भाषाई सिनेमा में महिलाओं का क्या भागीदारी रही है उसका उल्लेख किया गया है।

पंचम अध्याय

भाषाई सिनेमा और समाज :–

- सिनेमा और समाज
- सिनेमाई संस्कृति और संस्कृति

इस अध्याय के अंतर्गत भाषाई सिनेमा का समाज कैसा होता है इस बात का उल्लेख किया गया है द्य भाषाई सिनेमा देखने वाले लोग कौन होते है ,कहाँ पर ज्यादा देखा जाता है इत्यादिद्य

' ाष्टम अध्याय

- चुनींदा भोजपुरी और बांग्ला फिल्मों का समाज पर पड़ते प्रभाव का अध्ययन एव सुझाव ।

इस अध्याय के अंतर्गत दोनों भाषाओं में चुनी गयी फिल्मों का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया है द्य

1.14 निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्ययन से जो बातें सामने निकल कर आई हैं वो ये है की बांग्ला और भोजपुरी दोनों का समाज और संस्कृति अलग है। दोनों में काफी भिन्नताएं है। बांग्ला फिल्में मुख्यतःसाहित्य पर आधारित होती थी वहीं भोजपुरी फिल्में घरेलू मुद्दों पर आधारित होती थी। दोनों जगह महिलाओं के किरदारों में फर्क देखने को मिला।

बांग्ला में महिलाऐं जितनी मज़बूत दिखी भोजपुरी में उतनी ही घरेलू कामों में उलझी दिखी द्य बांग्ला फिल्मों की कहानी में बदलाव देखने को मिले है और उसका मुख्या कारण OTT प्लेटफार्म का आना है और इसी वजह से कहानियों में बदलाव देखने को मिल रहे है (अच्छे रूप में)। श्रीमती, मर्डर बाय द सी, कारगर, अपराजितो, कंगाल मलसत जैसी फिल्में इसका उदाहरण है। भोजपुरी फिल्मों के लिए भी "चौपाल" नाम का एक OTT प्लेटफार्म आ चुका है। इस आप पर 500 से अधिक घंटे का भोजपुरी कंटेंट उपलब्ध है।

बांग्ला में क्राइम थ्रिलर, सस्पेंस जैसे विषयों पर अब फिल्मों का निर्माण धीरे धीरे बढ़ रहा है। बांग्ला और भोजपुरी दो अलग अलग भाषा और संस्कृति को संबोधित करती है।

भोजपुरी फिल्मों की बात करें तो अंतर्राष्ट्रीय स्टार पर अपनी पहचान बना चूका भोजपुरी सिनेमा आज किसी परिचय का मोहताज़ नहीं है, लेकिन कंटेंट, महिलाओं की सहभागिता की कमी, द्विअर्थी गानों का बाढ़ आ जाना गन्दगी कर रहा है। 2004 के बाद से भोजपुरी सिनेमा का स्तर धीरे–धीरे नीचे गिरना शुरू हुआ जो आज भी चल रहा है।

सुझावः

भोजपुरी सिनेमा के स्तर को सुधारने के लिए साहित्य को अपनाना होगा। साथ ही महिला निर्माता निर्देशकों की सहभागिता की भी दरकार है अगर महिलाएं इस पेशे को अपनाएंगी तब भोजपुरी सिनेमा का स्तर सुधर सकता है।

पैसा लगाने वालों के साथ कोई समझौता नहीं करना होगा तभी भोजपुरी सिनेमा क स्टार को सुधार जा सकता है। महिलाओं के शरीर के साथ और नाच गाने के तरीकों में बदलाव लाना होगा।

सबसे बड़ी बात भोजपुरी फिल्म उद्योग के कोरियोग्राफर को इस बात का भी ध्यान रखना होगा की महिलाएं फिल्मों में अपने शौक से आती है इसका मतलब ये नहीं की आप गानों पे जिस तरह का निर्माण करने में उनके शरीर की नुमाइश करते है ये सही है, ये बिलकुल भी सही नहीं है। फिल्में लोगों के लिए बनाई जाती है तो अगर हम अच्छा सिनेमा अपनाएंगे तो निश्चित रूप से जनता देखेगी।

बांग्ला सिनेमा में इस वक्त साहित्य आधारित फिल्मों में कमी आई है। बांग्ला सिनेमा में पहले जैसा फिल्मों का माहोल नहीं रहा है। लेकिन बांग्ला फिल्में फिर भी अच्छा काम कर रही है।

महिलाओं की सहभागिता बढ़नी चाहिए जिससे बांग्ला समाज को अच्छी अच्छी फिल्में मिल सके। अपर्णा सेन, सुचित्रा सेन, कोंकोणा सेन शर्मा इसका उदाहरण है, जिनकी फिल्मो को हमेशा सराहा गया है तो इसलिए सहभागिता जरूरी है एक अच्छे विषय की साथ में महिलाओं की भी।